School of Social Sciences

Certificate

I hereby declare that the short synopsis " **महात्मा गाँधी एवं संयुक्त राष्ट्र सतत् विकास के ध्येय : एक समीक्षात्मक अध्ययन(Mahatma Gandhi Evm Sanyukt Rashtra Satat Vikas Ke Dhyeya: Ek Samikshatmak Adhyayan)**" being submitted in partial fulfillment of the requirement for the degree of Doctor of Philosophy in(Medieval and Modern History) under school of Social Sciences of U.P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj during the academic year 2024.

It is a bonafide record of original work carried out under the supervision of Prof. Santosha Kumar and has not been submitted in full or part to any other university or institute for a degree or diploma. Further, it is certified that the short synopsis is plagiarism-free and the repot has been submitted.

Abhilash

Abhilash kumar

(En. No.2300501)

Research Supervisor

Prof. Santosha Kumar

Faculty of Medieval and Modern History

Prof. Santosha Kumar

(Director of School of Social Sciences)

Pro.P.K.Pandey

(Secretary of RDC/ Director, R&D Cell)

महात्मा गाँधी एवं संयुक्त राष्ट्र सतत् विकास के ध्येय : एक समीक्षात्मक अध्ययन

SHORT SYNOPSIS

Submitted in partial fulfillment of the requirement of the degree of

DOCTOR OF PHILOSOPHY IN Medieval and Modern History

to

U.P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj

by

Abhilash kumar

En 2300501

Under the Supervision of

Prof. Santosha Kumar

Faculty of Medieval and Modern History

School of Social Sciences

U.P. Rajarshi Tandon Open University

Shantipurm, (Sector –F) Phaphamau, Prayagraj – 211021

Abhilash

शोध सार (ABSTRACT)

महात्मा गांधी का चिंतन भारतीय संस्कृति के अंतर तल में निहित ऐसी मूल्य पर दृष्टि प्रदान करता है जो कि वर्तमान राष्ट्र राज्य के सामाजिक आर्थिक राजनीतिक और नैतिक क्षेत्र को ही नहीं वरन संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा सतत विकास ध्येय को भी मार्गदर्शित करने का कार्य करता है।गांधी के चिंतन एवं कर्म का यद्यपि एक संदर्भ विशेष रहा है लेकिन वे केवल भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन एवं आधुनिक भारत की परिधि में ही आबद्ध नहीं किए जा सकते। वे निरन्तर मानवीय समस्याओं से जुड़े होने के कारण शाश्वत मूल्यों के उपासक रहे। समस्याएं चाहे पश्चिमी दुनिया की हो अथवा तृतीय विश्व के नवोदित राष्ट्रों की उनके समाधान में कहीं न कहीं प्रत्यक्षतः अथवा अप्रत्यक्ष गांधी की संबद्धता झलकने लगती है। एक नवीन मानव एवं एक नूतन समाज की संरचना की रचना की अवधारणा के संदर्भ में गाँधी दर्शन का अनुशीलन आवश्यक है। यह शोध महात्मा गांधी के दर्शन की पुनर्व्याख्या करता है तथा उसकी वर्तमान प्रासंगिकता की विवेचना करता है प्रस्तुत शोध महात्मा गांधी के विचारों और संयुक्त राष्ट्र सतत विकास ध्येय की समीक्षात्मक पुनर्आख्यान प्रस्तुत करेगा अपने निष्कर्ष के माध्यम से यह शोध भविष्य के लिए अंतर्दृष्टि प्रदान करने का कार्य करेगा।

प्रमुख शब्द (Keywords) :

भारतीय संस्कृति, मार्गदर्शित, शाश्वत मूल्य, संबद्धता, पुनर्आख्यान।

Abhilash

CONTENTS

S.Description No.	Page No. .
1 Introduction	1-2
2 Literature Review	2-7
3 Description Broad Area	7-8
4 Objectives of the Study	8-8
5 Research Methodology	8-11
6 Expected Outcome of the Research	11
References	
Plagiarism Report	

Abhilash

परिचय (Introduction)

गांधी ने राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक या पर्यावरणवादी विषयों में किसी सुनिश्चित दृष्टिकोण का प्रतिपादन नहीं किया। परंतु पर्यावरण का राजनीतिक विश्लेषण का गांधीय प्रतिमान विस्तृत है।

पर्यावरण से तात्पर्य हमारे आस-पास के उस वातावरण से है जो हमे चारों ओर से घेरे हुए है। व जिसमें जीव निवास करते हैं। पर्यावरण सभी जैविक एवं अजैविक अवयवों का मिश्रण है जो जीवों को चारों और से प्रभावित करता है। वायु, जल भूमि वनस्पति, पेड-पौधे, पशु व मानव सब मिलकर पर्यावरण बनाते हैं। प्रकृति में सबकी मात्रा और इनकी रचना इस प्रकार से व्यवस्थित है कि पृथ्वी पर एक संतुलनमय जीवन चलता रहे। विगत करोडों वर्षों से जब से पृथ्वी पर मनुष्य, पशु-पक्षी और अन्य जीव और जीवाणु उपभोक्ता बनकर आये तब से प्रकृति का यह वक्र निरन्तर व अबाध गति से चलता आ रहा है। जिनको जितनी आवश्यकता है, वह उन्हें मिलता रहता है और प्रकृति आगे के लिए अपने में और उत्पन्न करके संरक्षित कर लेती है।

गांधी जी का कहना है "पृथ्वी, वायु, भूमि तथा जल हमारे पूर्वजों प्राप्त सम्पत्तियाँ नहीं है। वे हमारे बच्चों की धरोहरे हैं। वे जैसी हमें मिली है वैसी ही उन्हें भावी पीढ़ियों को सौंपना होगा।"

महात्मा गांधी के चिंतन का क्षेत्र बहुत व्यापक एवं बहुआयामी है। गांधी मात्र विचारक, नेता तथा समाज सुधारक ही नहीं थे अपितु राजनीतिक चिंतन एवं दर्शन को नया मोड़ देने वाले सक्रिय राजनीतिज्ञ, सत एव विचारशील चितक थे। वे भारतीयता के सांचे में ढल सत्य, अहिंसा, प्रेम की प्रतिमूर्ति एवं संत थे। गाधी के चितन एवं कर्म का यद्यपि एक संदर्भ विशेष रहा है लेकिन वे केवल भारतीय स्वतंत्रता आदोलन एवं आधुनिक भारत की परिधि में ही आबद्ध नहीं किए जा सकते। वे निरन्तर मानवीय समस्याओं से जुड़े होने के कारण शाश्वत मूल्यों के उपासक रहे।

समस्याएं चाहे पश्चिमी दुनिया की हो अथवा तृतीय विश्व के नवोदित्त राष्ट्रों की उनके समाधान में कहीं न कहीं प्रत्यक्षतः अथवा अप्रत्यक्षतः गांधी की सम्बद्धता झलकने लगती है। एक नवीन मानव एवं एक नूतन समाज की संरचना की अवधारणा के संदर्भ में गाँधी दर्शन का अनुशीलन आवश्यक है। महात्मा गाँधी ने चिंतन के प्रत्येक क्षेत्र में अपने विचार व्यक्त किए है। सत्य, अहिंसा, प्रेम, सहयोग और सद्भावना गाँधीवादी मार्गदर्शन के मूल आधार है। मानवीय जीवन नाना प्रकार की समस्याओं से घिरा हुआ है। इसमें गाँधीवाद मनुष्य को सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक व नैतिक समस्याओं के प्रत्ति सकारात्मक दृष्टिकोण बताते हुए अंतःकरण की भावना से प्रेरित करता है। गांधी जी ने कहा कि ईश्वर में सजीव श्रद्धा से लक्ष्य की प्राप्ति सरल हो जाती है।

ईश्वर में सजीव श्रद्धा होने का अर्थ है मानव जाति का भातृत्व स्वीकार करना। इसका अर्थ सब धर्मों के लिए समान आदर भाव है।

Abhilash

महात्मा गाँधी का योगदान केवल भारत को स्वतंत्रता दिलाने में ही नहीं था बल्कि उन्होंने पर्यावरण की अशुद्धता और दुरूपयोग के प्रति भी अपनी चिता जाहिर की थी।

गांधी जी का कहना है- "मुझे प्रकृति के अलावा किसी प्रेरणा की आवश्यकता नहीं है। उसने मुझे अभी तक कभी असफल नहीं किया है। वह मुझे चकित करती है, मुझे विस्मित करती है, मुझे परमानंद में भेजती है।"

गांधी और पर्यावरण व सतत् विकास पर विमर्श करते समय हमें यह बात जान लेनी पड़ेगी, कि उनके चिंतन या लेखन में पर्यावरण' शब्द का प्रयोग नहीं के बराबर मिलता है। इतना ही नहीं, सच तो यह है कि प्राचीन काल से चले आ रहे हमारे संस्कृति बोध या भारतीय साहित्य लेखन में भी एक शब्द नहीं मिलता। यह शब्द तो अग्रेजी के एनवायरमेंट शब्द के हिंदी अनुवाद के रूप में पिछले चार-पाच दशकों से हमारे यहां प्रचलन में है।

महात्मा गांधी ने कभी भी पर्यावरणीय संरक्षण शब्द का प्रयोग नहीं किया लेकिन उन्होंने जो कहा और किया वह उन्हें एक पर्यावरणविद बनाता है।

1909 में ही उन्होंने अपनी पुस्तक हिन्द स्वराज' में मानव जाति को अप्रतिबंधित उद्योगवाद और भौतिकवाद के खिलाफ आगाह किया था। वह नहीं चाहते थे कि भारत इस सम्बन्ध में पश्चिम का अनुसरण करें और चेतावनी दी कि यदि भारत अपनी विशाल आबादी के साथ पश्चिम की नकल करने की कोशिश करता है तो पृथ्वी के संसाधन पर्याप्त नहीं होंगे।

गांधी जी का कहना है कि विश्व में एक नियमितता है, जो भी अस्तित्व में होता है उसके नियमन के लिए अपरिवर्तनशील नियम है। अंधा नियम, किसी भी मनुष्य के व्यवहार को नियमित नहीं कर सकता।"

उन्होंने 1909 में भी तर्क दिया था कि औद्योगीकरण और मशीनों का लोगों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। हालाँकि वह मशीनों के विरोध में नहीं थे। उन्होंने निश्चित रूप से मशीनरी के बड़े पैमाने पर उपयोग का विरोध किया उन्होंने नदियों और अन्य जल निकायों को प्रदूषित करने के लिए लोगों की आलोचना की। उन्होंने धुएँ और शोर से हवा को प्रदूषित करने के लिए मिलों और कारखानों की आलोचना की। हालाकि उनकी चिन्ताएँ केवल मनुष्यों तक ही सीमित नहीं थी क्योंकि उनके पास सभी जीय एकता की बहुत प्रबल भावना थी। उनका मानना था कि सभी प्राणियों को भी उतना ही जीने का अधिकार है जितना कि इसानों को और इंसानों और शेष चेतन दुनिया के बीच एक जीवत महसूस होता है। उनका मानना था कि मनुष्य को अपने परिवेश के सद्भाव में रहना चाहिए। किसी भी आधुनिक पर्यावरणविद से बहुत पहले, गाँधी ने बड़े पैमाने पर औद्योगीकरण की समस्याओं के बारे में दुनिया को आगाह किया था, जिसका हम आज सामना कर रहे हैं। गांधी ने कल्पना की थी कि मशीनीकरण न केवल औद्योगीकरण, बड़े पैमाने पर शहरीकरण और बेरोजगारी की ओर ले जाएगा। बल्कि पर्यावरण के विनाश की ओर भी ले जाएगा।

सतत विकास ध्येय वर्तमान दुनियावी समस्याओं से साक्षात्कार करते हुए उनकी समस्याओं को दूर करने के लिए एक मार्गदर्शिका का कार्य करते हैं यह ध्येय वैश्विक स्तर पर दुनिया को अधिक समावेशी, न्याय संगत एवं समाद्रित विश्व के निर्माण हेतु प्रयासरत हैं इन ध्येयों के पूर्व महात्मा गांधी द्वारा लगभग एक शताब्दी पूर्व से दिए गए विचार वर्तमान में भी

Abhilash

अत्यंत प्रासंगिक हैं अगर दुनिया उस राजनैतिक दार्शनिक की बातों को व्यवहार में लाती तो कहीं अधिक समावेशी और न्याय संगत विश्व-व्यवस्था का निर्माण बहुत पहले ही हो चुका होता।

साहित्य समीक्षा (Lierature Review)

यद्यपि महात्मा गाँधी को आधार बनाकर राजनीति, धर्म, संस्कृति, समाज व्यवस्था, राज्य पर विचार आदि विषय पर बहुत से शोधकार्य हो चुके हैं किंतु शोधार्थी की दृष्टि में स्वतंत्र रूप से "महात्मा गाँधी एवं संयुक्त राष्ट्र सतत् विकास के ध्येय एक समीक्षात्मक अध्ययन" विषय को लेकर अद्यावधि में कोई साक्षात्
शोधकार्य शोधार्थी की दृष्टि में नहीं आया है, किन्तु गांधी के पर्यावरणीय चिंतन पर हुए कतिपय शोध कार्य निम्न प्रकार से दृष्टव्य है-

1- न्यायाधीश चन्द्रशेखर धर्माधिकारी, गांधी विचार व पर्यावरण, सर्व सेवा संघ प्रकाशन वाराणसी (2011) गांधी विचार और पर्यावरण पुस्तक में न्यायमूर्ति श्री चन्द्रशेखर धर्माधिकारी ने गाधी विचार के महत्वपूर्ण पहलू खादी, निसर्गोपचार, स्वदेशी, अहिसा, असंग्रह आदि को प्रकृति व पर्यावरण सरक्षण के लिए आवश्यक तत्व माना है। लेखक के अनुसार गांधी जी का प्रकृति के प्रति बेहद लगाव था।

2- नवनीत कुमार गुप्ता, ग्लोबल वार्मिंग का समाधान गाँधीगीरी, पेन्सी बुक्स प्रकाशन (2012): इस पुस्तक में यह दर्शाया गया है कि गाधीजी की विचारधारा केवल भारत के लिए नहीं, बल्कि सारी दुनिया के लिए है, जिसे लोगों को समझना पड़ेगा। एक उदाहरण देकर यह समझाया गया है कि जैसे चिराग के नीचे अंधेरा रहता है और चारों तरफ उससे प्रकाश मिल जाता है। लेकिन गांधीजी के विचारों का चिराग ऐसा है कि उसके नीचे भी रोशनी होगी और बारों तरफ के लोगों को भी प्रकाश मिलेगा। सदियों तक गांधीजी के विचार जनमानस को प्रकृति का सम्मान करने और उससे प्रेममयी संबध स्थापित करते हुए इस अनोखे और प्यारे पृथ्वी ग्रह को जीवनदायी ग्रह बनाए रखने की प्रेरणा देते रहेंगे।

3- शशिकला ए०एस० ग्रीन फ्यूचर के लिए गांधी के पर्यावरणीय विचार, गाधीमार्ग 2012: 34(1): गांधीजी के पर्यावरणीय विचार आज के हरित भविष्य की दिशा में महत्वपूर्ण मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। यद्यपि उनके समय में पर्यावरण संकट की वर्तमान अवधारणा नहीं थी, फिर भी उनके सिद्धांत – जैसे ग्राम स्वराज, स्वदेशी, न्यूनतम उपभोग, अहिंसा और सत्याग्रह – प्रकृति और मानव के बीच सामंजस्य की वकालत करते हैं। गांधीजी का मानना था कि प्रकृति में हर किसी की आवश्यकता पूरी करने की क्षमता है, लेकिन लोभ को नहीं। उन्होंने आधुनिक सभ्यता की भौतिकवादी प्रवृत्ति की आलोचना की और स्थायी विकास के लिए वैकल्पिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया जो सामाजिक न्याय, आत्मनिर्भरता और जैव विविधता के संरक्षण पर आधारित है।

Abhilash

4- एम०आर० राजगोपालन पर्यावरणीय सकट और गांधी की प्रासंगिकता, गांधी धाम ट्रस्ट तमिलनाडु मनुष्य की प्रगति और विकास के मार्ग ने प्रकृति के पतन को जन्म दिया है। अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने की चाह में उसने प्रकृति का भरपूर दोहन किया है। यह ऐसा विकास है जो पारिस्थितिक रूप से टिकाऊ नहीं है। जेम्स मैकहॉल के शब्दों में, मनुष्य ग्रह पर अब तक का सबसे खतरनाक जीव बन गया है।

5- आर०सी० शर्मा गांधीवादी पर्यावरणवाद (नई दिल्ली ग्लोबल विजन, 2003), पृ० 45, जैसा कि गांधी की परिकल्पना थी, अहिंसा में पारिस्थितिक संकट सहित हमारी सभी समस्याओं को हल करने की शक्ति है। विभिन्न पर्यावरण आदोलन गांधीवादी अहिंसा को एक महत्वपूर्ण सिद्धांत के रूप में स्वीकार करते हैं। इनमें से अधिकांश आंदोलन पारिस्थतिक विवेक और मितव्ययिता के गांधीवादी मूल्यों और विकेंद्रीकृत लोकतंत्र और ग्राम स्वराज के गांधीवादी मॉडल का दावा करते है।

6- महात्मा गांधी के संपूर्ण जीवन कृतित्व पर संपादित संपूर्ण वांग्मय में से गांधी जी को समग्रता से समझने में शोधार्थी को इस सिनोप्सिस के लिए विशेष अंतर्दृष्टि मिली है गांधी जी के पत्र व्यवहार, भाषण, व्यक्तित्व, जीवन मूल्य आदि को समझने में संपूर्ण वांग्मय काफी समृद्ध स्रोत है।

7- हिंद स्वराज महात्मा गांधी से बातचीत पर आधारित पुस्तक हिंद स्वराज से महात्मा गांधी के दर्शन की संपूर्ण व्याख्या की संक्षिप्त प्रस्तुति शोधार्थी को प्राप्त होती है हिंद स्वराज में गांधी जी उद्योग, प्रकृति, मानवीय जीवन मूल्य, भारतीय स्वराज, आधुनिकता और पश्चिमी सभ्यता जैसे विषयों पर आलोचनात्मक दृष्टि प्रदान करते हैं।

8-सत्य के साथ मेरे प्रयोग महात्मा गांधी की आत्मकथा है इसमें महात्मा गांधी के जीवन पर संपूर्णता से साक्षात्कार होता है। मोहनदास करमचंद गांधी से महात्मा बनने तक के उनके सफर पर यह पुस्तक विहंगमावलोकन करती है इसमें गांधी जी अपने विचार यात्रा को जहां-जहां से समृद्ध किया है विस्तार से दर्ज किया है। उनके जीवन-प्रयोग को भी विस्तार से समझने में यह पुस्तक काफी मदद करती हैं।

विवरण विस्तृत क्षेत्र (Description Broad Area)

गांधी जी कहा करते थे कि "प्रकृति के साथ मेल बिठाने के लिए जितने प्रयोग और त्याग किए जाए, कम है। सबकी भलाई में ही व्यक्ति की भलाई निहित होती है।" सीमित संसाधनों के साथ जीवन बिताने और पर्यावरण संरक्षण के द्वारा ही भावी विनाश से बचा जा सकता है।

Abhilash

वर्तमान में पर्यावरण संरक्षण के लिए सभी का सहयोग आवश्यक हो गया है और इस कार्य में महात्मा गांधी का दिखाया मार्ग सार्थक साबित होगा। यद्यपि शोधार्थी ने किसी उपाधि हेतु महात्मा गांधी और पर्यावरणीय चिंतन का अध्ययन नहीं किया है यद्यपि महात्मा गांधी की सैद्धान्तिक ज्ञानराशि की उपयोगिता को दृष्टि में रखकर। "महात्मा गाँधी एवं संयुक्त राष्ट्र सतत् विकास के ध्येय एक समीक्षात्मक अध्ययन" में रूचि जागृत हुई। अतः शोधार्थी ने उक्त विषय का चयन अपने शोध कार्य के रूप में किया।

प्रस्तावित शोध महात्मा गांधी के व्यक्तित्व, कृतित्व, जीवन मूल्य एवं दार्शनिक विचारों के साथ-साथ संयुक्त राष्ट्र सतत विकास के 17 ध्येयों का उपर्युक्त परिप्रेक्ष्य में गंभीर शोधपरक अध्ययन का क्षेत्र होगा।

अध्ययन के उद्देश्य (Objectives of the Study)-

1-महात्मा गांधी के व्यक्तित्व जीवन मूल्य विचारधारा दर्शन का विश्लेषण करना।

2-संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना उद्देश्य एवं उसके द्वारा दी गई सतत विकास की अवधारणा का ऐतिहासिक एवं समसामयिक परिप्रेक्ष्य में अध्ययन करना।

3-महात्मा गांधी के सतत विकास से संबंधित विचारों जन आंदोलन का संश्लेषण करना।

4-महात्मा गांधी और संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास संबंधी विचारों की आधुनिक युग के परिप्रेक्ष्य में तुलनात्मक मूल्यांकन करना।

5-गांधीवादी विकास मॉडल और संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्षण के बीच सामंजस्य के तत्वों को रेखांकित करना।

शोध प्रविधि (Research Methodology)

शोधार्थी अपने शोध प्रविधि में पुस्तकालय एवं दस्तावेजी शोध प्रविधि के द्वारा देश के प्रतिष्ठित संग्रहालय एवं पुस्तकालयों में गांधीजी पर संपादित पुस्तकों एवं संदर्भ ग्रंथो आदि का अध्ययन करेगा।

प्रस्तावित शोध में शोधार्थी द्वारा विश्लेषणात्मक शोध प्रविधि, तुलनात्मक शोध प्रविधि, ऐतिहासिक शोध प्रविधि को अपना सकते हैं प्रस्तावित शोध प्रस्ताव मुख्य रूप से अभिलेखागारीय संदर्भों एवं द्वितीयक शोध साक्ष्यों पर आधारित होगा। जिसमें तथ्यों के संकलन हेतु ऐतिहासिक शोध प्रविधि के माध्यम से महात्मा गांधी द्वारा दिए गए भाषणों उनके द्वारा लिखित पत्र-पत्रिकाओं के लेख पुस्तकों, महात्मा गांधी पर संपादित पुस्तक संपूर्ण वांग्मय, इन सब के अलावा तत्कालीन समय में अन्य लेखकों के द्वारा महात्मा गांधी पर दिए गए विचार और उसमें जीवन मूल्य दर्शन पर दिए गए विचारों का भी अध्ययन शोधार्थी के द्वारा किया जाएगा संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों का अध्ययन एवं उस पर

Abhilash

प्रतिपादित टीकाओं का विश्लेषण करना प्राप्त तथ्यों के विश्लेषण हेतु विश्लेषणात्मक शोध प्रविधि के माध्यम से महात्मा गांधी एवं संयुक्त राष्ट्र सतत विकास लक्ष्य पर प्राप्त तथ्यों एवं साक्ष्यों का गहन विश्लेषण किया जायेगा।

समीक्षात्मक शोध प्रविधि के द्वारा शोधार्थी महात्मा गांधी एवं संयुक्त राष्ट्र सतत विकास के ध्येयों का क्रमशः समीक्षा करते हुए अपने शोध निष्कर्ष पर पहुंचेगा।

विषय वस्तु विश्लेषण के माध्यम से शोधार्थी महात्मा गांधी एवं संयुक्त राष्ट्र सतत विकास ध्येय के प्रमुख विचारों, उद्देश्यों एवं दृष्टिकोण के संश्लेषण के द्वारा अपने शोध अध्ययन का निष्कर्ष निकलेगा।

शोध के अपेक्षित परिणाम (Expected Outcome of the Research)

गांधीवादी दृष्टिकोण से, वर्तमान पर्यावरणीय गडबडी, वनों की कटाई, मिट्टी और जैव विविधता के नुकसान से लेकर प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन तक एक बीमारी नहीं बल्कि केवल एक लक्षण है। एक अच्छा डाक्टर बीमारी का इलाज करता है, न कि लक्षण का।

हम कह सकते हैं कि गाधी का पर्यावरणवाद भारत और दुनिया के लिए उनकी समग्र दृष्टि के साथ सही बैठता है, जो प्रकृति से मानव जीविका के लिए नितांत आवश्यक है।

पिछले कुछ दशकों के दौरान शिक्षा जगत खासतौर पर पर्यावरण और सतत् विकास से संबंधित क्षेत्रों में हमें पारिस्थितिकी से जुड़ी समस्याओं का समाधान करने के लिए गांधीवादी सिद्धांतों के संबंध में गंभीर अध्ययन देखने को मिलते है। अगर भविष्य की पीढ़ियों के लिए पर्यावरण को बचाए रखना है, तो गाँधी के बताए रास्तों के अलावा और दूसरा रास्ता नहीं हो सकता है।

Abhilash

संदर्भ (References)

1. गांधी, मोहनदास करमचंद. (1909). *हिन्द स्वराज* (पृष्ठ 79). शिक्षा भारती प्रकाशन: दिल्ली।

2. गुहा, रामचंद्र. (2015, 26 जनवरी). *गांधी और पर्यावरण आंदोलन*. प्रतिलिपि: द्विभाषिक साहित्यिक पत्रिका। प्रकाशित ecoyojna.wordpress.com पर।

3. गुप्ता, नवनीत कुमार। (2012). *ग्लोबल वार्मिंग का समाधान गांधीगिरी*। पेन्सी बुक्स प्रकाशन: नई दिल्ली। (पृ. 5, 6, 20, 55, 85)

4. सिंह, भगवान। (2015, 2 नवम्बर). *पर्यावरण संकट के दौर में गांधी*. जनसत्ता।

5. रंगराजन, महेश। (2010). *भारत में पर्यावरण के मुद्दे* (पृ. 95, 102). पियरसन, नई दिल्ली।

6. *पर्यावरण और सतत् विकास पर महात्मा गांधी: अहिंसा और सरल जीवन से ही पृथ्वी बच सकती है*. (17 अगस्त 2020). डेलीहंट।

7. अज्ञात लेखक। (2017, नवम्बर)। *वैश्विक पर्यावरण संकट एवं गांधीवादी विचारों की प्रासंगिकता*. *Educational Journal*, खंड 2, अंक 6, पृ. 400–402।

8. धर्माधिकारी, चन्द्रशेखर। (2009). *गांधी विचार और पर्यावरण* (पृ. 91)। सर्वसेवा संघ प्रकाशन: वाराणसी।

9. खोशू, टी. एन. (1995). *महात्मा गांधी: एपोस्टल ऑफ एप्लाइड ह्यूमन इकोलॉजी* (पृ. 9). टेरी, नई दिल्ली।

10. मिश्रा, आर. पी. (2009). "पर्यावरणीय चुनौतियों का सामना गांधीवादी मार्ग।" *अनासक्ति दर्शन*, 5(2), पृ. 9।

11. पारेख, भीखू। (1989). *गांधी का राजनीतिक दर्शन: एक गंभीर परीक्षा* (पृ. 72). मैकमिलन: लंदन।

12. गांधी, मोहनदास करमचन्द। (4 दिसम्बर, 1924). *यंग इंडिया*, नवजीवन प्रकाशन मंडल, अहमदाबाद

13. रिचर्ड्स, ग्लिन। (1991). *गांधी का दर्शन: उनके मूल विचारों का अध्ययन* (पृ. 33). कर्जन प्रेस, यूनाइटेड किंगडम।

14. टी०एन० खोशू, Op.cit. पृ० 3

15. रॉय, माश्रय। (1985). *सेल्फ एंड सोसाइटी: ए स्टडी इन गांधीयन थॉट* (पृ. 36–38). सेज पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।

16. शर्मा, आर. सी. (2003). *गांधीवाद पर्यावरणवाद* (पृ. 45). ग्लोबल विज़न पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

17. गांधी, मोहनदास करमचंद। (15 अक्टूबर 1925). *यंग इंडिया*, नवजीवन प्रकाशन मंडल, अहमदाबाद।

18. स्वान, खंड V, पृ० 5

19. जे०सी० कुमारप्पा, स्थायीता की अर्थव्यवस्था अहिंसा पर आधारित एक सामाजिक व्यवस्था के लिए एक खोज।

20. पर्यावरण पर गांधी के विचार-प्रकृति के पांच तत्व।

21. **गांधी, मोहनदास करमचंद.** (1949). *छात्रों के लिए*. नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद।

23. **सिंह, गोविंद.** (2017). *महात्मा गांधी: एक सतत विकास पथ प्रदर्शक*. Delhi Greens.

Abhilash

24. "गांधी: ए स्टडी" (National Book Agency, कोलकाता, 195X, पृष्ठ 208

25 **Gandhi, M.** (2007). पर्यावरण पर गांधी. bestquotes.wordpress.com

26. **राजगोपालन, एम. आर.** (2001). *पर्यावरण संकट और गांधी की प्रासंगिकता*. स्मारिका, 24 सितम्बर.

27. **ई. एफ. शूमाकर,** *स्मॉल इज ब्यूटीफुल: ए स्टडी ऑफ इकोनॉमिक्स एज इफ पीपल मैटर्ड* लंदन: विंटेज बुक्स, 2011

28. बरूआ ए० स्थिरता के दर्शन की ओर गांधीवादी मार्ग। समाजशास्त्र और नृविज्ञान 2015, 3(2):136-1431*

29. **झा, एस.** *महात्मा गांधी: एक पर्यावरणविद् भविष्य दृष्टिकोण के साथ*. पंचकोट महाविद्यालय शोध-पत्रिका.

30. **गुहा, रामचंद्र.** *एक व्यक्ति को कितना उपभोग करना चाहिए? भारत और अमेरिका में पर्यावरणवाद*. नई दिल्ली: परमानेंट ब्लैक एवं यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस, 2006.

Plagiarism Report

Abhilash

DrillBit

The Report is Generated by DrillBit Plagiarism Detection Software

Submission Information

Author Name	Abhilash Kumar
Title	Mahatma Gandhi Evm Sanyukt Rashtra Satat Vikas Ke Dhyeya: Ek Samikshatmak Adhyayan
Paper/Submission ID	3611818
Submitted by	santoshauprtou@gmail.com
Submission Date	2025-05-14 12:24:49
Total Pages, Total Words	12, 2780
Document type	Synopsis

Result Information

Similarity **3 %**

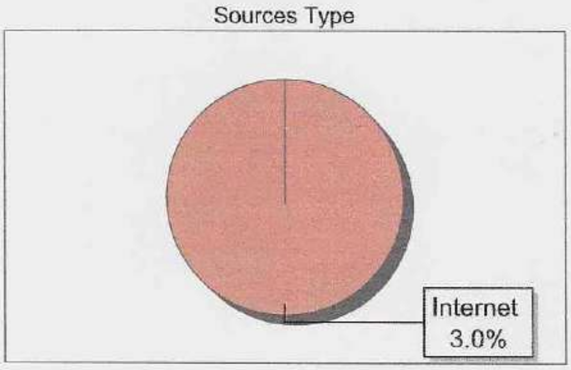

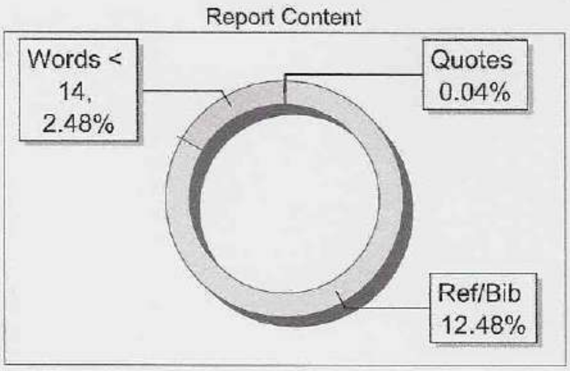

Exclude Information

Quotes	Not Excluded
References/Bibliography	Not Excluded
Source: Excluded < 14 Words	Not Excluded
Excluded Source	**0 %**
Excluded Phrases	Not Excluded

Database Selection

Language	Non-English
Student Papers	Yes
Journals & publishers	Yes
Internet or Web	Yes
Institution Repository	Yes

A Unique QR Code use to View/Download/Share Pdf File

Abhilash

DrillBit

DrillBit Similarity Report

3	5	A	A-Satisfactory (0-10%) B-Upgrade (11-40%) C-Poor (41-60%) D-Unacceptable (61-100%)
SIMILARITY %	MATCHED SOURCES	GRADE	

LOCATION	MATCHED DOMAIN	%	SOURCE TYPE
1	www.studocu.com	1	Internet Data
2	pdfcoffee.com	1	Internet Data
3	translate.google.com	1	Internet Data
4	pdfcookie.com	<1	Internet Data
5	www.slideshare.net	<1	Internet Data

Abhilash